पूज्य उपाध्यायश्री का प्रवचन

ता. 15 सितम्बर 2013, पालीताना

जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ के उपाध्याय प्रवर पूज्य गुरूदेव मरूधर मणि श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. ने श्री जिन हरि विहार धर्मशाला में आज प्रवचन फरमाते हुए कहा– हमारी जेब से 200–500 रूपये इधर उधर हो जाये, तो दो तीन दिनों तक चैन नहीं आता, रोटी नहीं भाती! परन्तु पूरी जिन्दगी हम जो बरबाद कर रहे हैं, उस विषय में हमारे मन में पीडा के भाव क्यों नहीं पैदा होते। रूपये तो जाने के बाद दुबारा पाये जा सकेंगे पर जिन्दगी यदि खो दी तो दुबारा कैसे पायेंगे!

उन्होंने कहा– हम अपने जीवन का 80 प्रतिशत हिस्सा व्यर्थ की चर्चाओं, गप्पों और बेकार कामों में बिताते हैं। जिनके साथ हमारा कोई संबंध नहीं है, जिस विषय में चर्चा करने से कोई लाभ होने वाला नहीं है, न हमारी चर्चा से स्थिति में परिवर्तन हो सकता है, उन बातों में हम अपना अनमोल समय, उर्जा, और बौद्धिक धन नष्ट करते हैं। और व्यर्थ में कर्म बंधन करते हैं।

उन्होंने कहा– पूर्व समय में आचार्यों के पास साधन नहीं थे, सुविधाऐं नहीं थी, और थी भी तो उनके उपयोग का कोई भाव नहीं था। ऐसी विषम परिस्थितियों में भी वे आचार्य, साधु गण कितना स्वाध्याय करते थे! कितना अध्ययन करते थे! आज सारी सुविधाऐं होने पर भी हमारा चित्त अध्ययन, अध्यापन, स्वाध्याय और तत्वचर्चा में कहॉ टिकता है!

पूर्व समय में विहार कितनी मुश्किलों से भरा था। न कोई ठेला चलता था, न गाडी! न कोई मजदूर होता था! न आल्मारियॉ भरी जाती थी! तब भी उन पूर्वाचार्यों ने कितने महान् ग्रन्थों की रचना की थी। उन आचार्यों के उपकार का कोई वर्णन नहीं किया जा सकता।

उन्होंने कहा– उन आचार्यों ने कोई अपने नाम के लिये ग्रन्थ नहीं लिखे। अपने अन्तर के भावों को प्रकट करने के लिये उन्होंने ग्रन्थ रचना का सहारा लिया।

आचार्य हरिभद्रसूरि की रचनाओं का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा– उन्होंने 1444 ग्रन्थों की रचना करने का संकल्प लिया था। 1443 ग्रन्थ लिखे जा चुके थे। केवल एक ग्रन्थ की रचना बाकी थी। वे अपनी स्थिति समझ चुके थे। वे जान गये थे कि इस दीपक में अब तेल बाकी नहीं है। यह दीया अब बुझने ही वाला है। बुझने से पहले मेरा संकल्प पूरा हो जाना चाहिये। उन्होंने अंत में परमात्मा महावीर की स्तुति करना प्रारंभ किया। यह स्तुति ही उनकी अंतिम रचना हो गई। इस स्तुति की तीन गाथाओं ने उच्चारण हो गया! चौथी गाथा का पहला चरण भी हो गया। अब केवल तीन चरण बाकी रहे। और तभी उनका स्वर्गवास हो गया। स्तुति अधूरी रही।

साधु साध्वी श्रावक श्राविका सभी एकत्र हुए। आचार्य श्री के उपकारों के प्रति, संघ के प्रति उनके उपकारों के प्रति नत मस्तक होते हुए संकल्प किया कि इस अधूरी स्तुति को पूरा करना है। और हम सभी को मिल कर पूरा करना है। चतुर्विध संघ ने एकत्र होकर मिलकर तीन चरणों का निर्माण कर उस स्तुति को पूरा किया। वे श्रावक भी कितने विद्वान् होंगे!

उन्होंने कहा– आचार्य पद की अपनी जिम्मेदारी होती है। अपने समुदाय के समस्त साधु साध्वियों की सार संभाल उन्हें करनी होती है। साधुओं की ज्ञान साधना कैसी चल रही है, चारित्र साधना कैसी चल रही है! यह देखना भी होता है। और निर्देश भी देने होते हैं। समय निकालना होता है। उनकी बातों को, समस्याओं को सुनना होता है। समाधान करना होता है।

और यही बात अपने घर पर भी लागू होती है। जिस घर का मुखिया अपनी जिम्मेदारी को समझता है, उस घर में सदैव शान्ति और आनंद का साम्राज्य होता है। घर के सभी सदस्यों की इच्छाओं, भावनाओं को धीरज के साथ सुनना होता है, तो साथ ही कभी कभी अपनी इच्छाओं का त्याग भी करना होता है। वही घर प्रगति करता है।

चातुर्मास प्रेरिका पूजनीया बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. ने कहा– तीर्थ यात्रा का अर्थ होता है, हमें अपने जीवन में से क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, ईर्ष्या आदि दुर्गुणों को देश निकाला देना। उसी व्यक्ति की तीर्थ यात्रा सफल मानी जाती है, जो यहॉ कुछ छोड कर जाता है और यहॉ से कुछ लेकर जाता है।

हमें यहॉ से लेकर जाना है, परमात्मा की भक्ति, परोपकार का भाव, सरलता और सहजता! छोड कर जाना है दुर्गुणों का भंडार!

प्रेषक
दिलीप दायमा